thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : ०६ ● १० फरवरी, २०१५ फाल्गुन कृष्ण षष्ठी, सम्वत् २०७१ ● दयानन्दाब्द १६० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११५

बच्चे ही राष्ट्र के आधार स्तम्भ होते हैं- -देवेन्द्रपाल वर्मा

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बुढ़ाना का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक २ फरवरी २०१५ को डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, बुढ़ाना का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र .के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा उत्सव के मुख्य अतिथि थे। उनके वहां पहुँचने पर विद्यालय के प्रबन्धक एवं उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. श्री अरविन्द कुमार ने माल्यार्पण एवं शाल उढ़ाकर उनका स्वागत किया। बच्चों के विविध कार्यक्रम हुए।

सभा प्रधान जी ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि बच्चे ही राष्ट्र का आधार स्तम्भ होते हैं। बच्चों का निर्माण करने में माता पिता और गुरूजनों का विशिष्ट योगदान होता है।

महाभारत काल में जब गुरूजन राजप्रसादों में पढ़ाने जाने लगे तब से भेदभाव उत्पन्न होने लगा। विदेशियों ने हमारे देश को हमारी इस कमी का लाभ उठाया पहले यवन विदेशियों ने उठाकर हमें पराधीन बनाया हमें लूटा फिर अंग्रेजों ने हमें लूटा और अपना गुलाम बना लिया और हमें सदा गुलाम रखने के लिए देश में लार्ड मैकाले की शिक्षा चला दी। वैदिक शिक्षा के हटने से निरन्तर सभी तरह से गिरावट आती गयी। महर्षि दयानन्द का जब अभ्युदय हुआ तो उन्होंने पराधीनता के मूल में अवैदिक शिक्षा, नारी शोषण, ढोंग पाखण्ड, जाति पांति ऊँच नीच के भेद को पहचाना। फिर उन्होंने इस सबके विरूद्ध आवाज उठायी। आर्य समाज की स्थापना आन्दोलन के रूप में की और वैदिक शिक्षा पद्धति चलाने पर जोर दिया अनेक गुरूकुल व बालक बालिकाओं के विद्यालय खुले। जिनमें पढ़कर उत्तम नागरिक तैयार होने लगे।

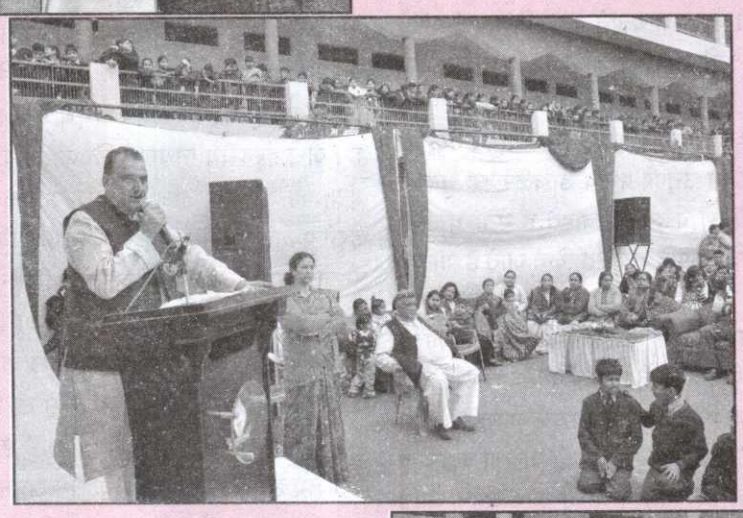

स्वराज्य आन्दोलन में सोल्लास आर्य नर नारियों ने भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया। स्वाधीनता के बाद शासन सत्ता में बैठे नेताओं ने देश की भौतिक उन्नति में ध्यान लगा दिया। जीवन निर्माण की शिक्षा पर ध्यान न दिया। शिक्षा व्यवस्था वहीं रखी जिसमें नैतिक जीवन निर्माण का कोई पाठ ही नहीं है। हमारे सभी विद्यालय सरकारी सहायता के व्यामोह में उसी शिक्षा को चलाने के लिए विवश है। फलत: आज युवा पीढ़ी उच्छृंखल उन्मुक्त जीवन की आदी हो रही है। स्वार्थपरता बढ़ रही है। राष्ट्रोत्थान का भाव तिरोहित हो रहा है। सभी विकार-नारी शोषण, शिक्षा के स्थान पर येन केन प्रकारेण डिग्री पाने की लालसा, भ्रष्टाचार, अनाचार धर्म के नाम पर ढोंग पाखण्ड बढ़ रहे हैं। इन विकारों से राष्ट्र को मुक्त कराना हमारा धर्म है अत: हम अपने विद्यालयों में सरकारी शिक्षा के साथ ही वैदिक शिक्षा के पाठों का समावेश करें उनकी परीक्षाओं की भी विशेष व्यवस्था करें ताकि बालक बालिकाओं का नैतिक चरित्र उत्तम हो और वे राष्ट्र की उन्नति के आधार बन सकें।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. ने कक्षा १ से १२वीं कक्षा तक के लिए नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छपवाई है। आर्य समाज के सभी विद्यालय अनिवार्य रूप से उन पुस्तकों को अपने विद्यालय में मंगाकर उन्हें पाठ्यक्रम में समाहित करें। बच्चों में उत्साहवर्धन के लिए उनकी विशेष परीक्षायें करायें उन्हें पुरस्कृत करने का भी प्राविधान करें। ऐसा करने से छात्र-छात्राओं में इन्हें पढ़ने का उत्साह जगेगा। धीरे धीरे नैतिक चरित्र सुधरेगा और उससे सुनिर्मित युवा पीढ़ी सभी विकारों के विनाश के लिए कटिबद्ध होगी। अन्त में भाषण को विराम देते हुए प्रधान जी ने विद्यालय के संचालक मण्डल प्रधानाचार्या व सभी शिक्षक, शिक्षिकाओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप सभी शिक्षा के इस पुनीत कार्य को करते हुए समाज व राष्ट्र निर्माण में योगदायी बनने का सौभाग्य प्राप्त करने में समर्थ हों ऐसी मेरी प्रभु से प्रार्थना है। उत्सव में-३००० बच्चे व लगभग १५०० अभिभावक गण उपस्थित थे।

विशेष रूप में चितरंजन स्वरूप, राज्य मंत्री उ.प्र. सरकार जिला विद्यालय निरीक्षक मुजफ्फर नगर, एस.डी.एम. बुढ़ाना, राजीव कुमार, अध्यक्ष, रेखा त्यागी-प्रधानाचार्या की उपस्थिति उल्लेखनीय है।

वेदामृतम्

अस्य शासरूमयासः सचन्ते हविष्मत्र उशिजो ये च मर्ताः।
दिवश्चित्पूवो न्यसादि होतापृच्छयो विश्पतिर्विक्षु वेधाः।।
ऋग्वेद-१/०/२

प्रस्तुत वेदमन्त्र में हविष्मान (सदा यज्ञ शेष का सेवन करने वाले) उशिज (सदा ज्ञान परिपक्व बनने वाले) बनकर प्रभु की उपासना करने की प्रेरणा की गई है। प्रभु आपृच्छय है-संसार के प्रत्येक पदार्थ में उसकी महिमा है, वह विश्वपति-सबके रक्षक हैं, वह वेधा हैं-कर्मानुसार फल प्रदाता है। प्रभु की सच्ची उपासना यही है कि हम ज्ञानी और यज्ञशील बनकर मल विक्षेप के आवरण को हटा कर हृदयस्थ प्रभु का दर्शन करें।

हम ज्ञानी और ज्ञानपूर्वक यज्ञादि कर्म करने वाले बन जीवन के उद्देश्य प्रभु के ज्ञान को प्राप्त करें।

प्रभु तुम जैसा कोई नहीं, तुम अनुपम हो।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

राजनीति का विद्रूप राष्ट्र के लिए अत्यन्त हानिकर

पूर्वज ऋषि मुनियों ने शासन व्यवस्था को सुव्यवस्थित बनाने व रखने के लिए राजनीति का सृजन किया जिसके व्यवहार से शासन सुदृढ़ व व्यवस्थित रहे। परन्तु आज राजनीति का स्वरूप बिगड़ता जा रहा है। आज राजनीति का स्वरूप, राजनीति का लबादा ओढ़कर लोगों में विरोधी भावना भरकर अपना लाभ उठाना-बनता जा रहा है।

हम सदियों पराधीन रहे हमारा वैभव लूटा गया हमें कंगाल बनाया गया। विदेशियों ने हमें अपना दास बना लिया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आकर हमें स्वतंत्र होने का मार्गदर्शन दिया। राष्ट्र को स्वतंत्र सुसमृद्ध रखने का उपदेश दिया। हमें अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लिखकर दिया जिसमें सभी प्रकार की उन्नति का मार्ग उन्होंने दर्शित किया है। शासन को सही रखने के लिए प्रजातंत्रीय शासन पद्धति अपनाने का सूत्र दिया। जिसके द्वारा राजार्य सभा विद्यार्य सभा और धर्मार्थ सभा बनाकर सभी प्रकार से राष्ट्र को सुरक्षित और सुव्यवस्थित रखने का मार्ग दर्शन दिया है।

स्वराज्य की हमारे अन्दर ललक जगी, उसके लिए आन्दोलन चला हम विजयी हुये देश स्वतंत्र हुआ, प्रजातंत्रीय पद्धति से प्रशासन स्थापित करने की भावना से राष्ट्र का प्रजातंत्र (गणतंत्र) नाम दिया गया। अपना संविधान बना जिसमें ऋषि के सभी मन्तव्य समाविष्ट किये गये।

देश में प्रजातंत्रीय व्यवस्था की भावना से ही लोक सभा व राज्य सभा तथा प्रदेश के विधान सभा व विधान परिषद् नाम से व्यवस्थापिका सभायें बनीं उनके निर्माण में हमारे पूर्वजों की भावना थी कि सभी प्रकार की विकृतियों से रहित राष्ट्र व प्रदेश बनें। देश का हर नर-नारी अपने को सुशासन स्थापित कराने की व्यवस्था का अंग माने। लोक सभा व विधान सभा में जन सामान्य से योग्य व्यक्ति चुनकर आयें। राज्य सभा व विधान परिषद में प्रबुद्ध विविध विषयों के ज्ञाता प्रकाण्ड विद्वान चयनित हों ताकि वे लोक सभा व विधान सभाओं में निर्णीत किसी भी नियम से प्रदेश व देश का अहित न होने पाये इस पर सूक्ष्मदृष्टि रखें और किसी भी प्रकार शासन में अव्यवस्था न हो यथावश्यक संशोधन लोक सभा, विधान सभा के निर्णयों पर करके तथा उनके अनुसार सरकार को व्यवस्था बनाने का अधिकार दें। फिर उसके अनुसार शासन चले। आज देखने में व्यवस्था तो वही है परन्तु आज निर्वाचन में व्यक्ति की जनसेवा की प्रियता के आधार पर नहीं, धन, बल व बाहुबल के आधार पर विधायक व सांसद बनते हैं। जो सही व गलत ढंग से निर्वाचक को जितना अधिक धन पहुंचा सके और दबंगई से उनपर प्रभाव डालकर वह चुनकर पहुंचते हैं। परिषद् में रसूखदार जिन्हें मंत्रिगण व सांसद चाहते हैं उन्हें चयनित कराते हैं शिक्षा शास्त्रियों के बजाय फिल्म स्टार आदि चयनित किये जाते हैं पार्टियां प्रत्याशी को टिकट देने के लिए धन लेने लगी है। फलतः राष्ट्रोन्नति के उपाय तिरोधहित हो रहे हैं। चुनाव में अपने किए गये धन का कई गुना धन कमाने का ही यत्न करते हैं। पार्टियों के लिए आज सत्ता पाने व अपने हाथ में पकड़कर रखने की ही नीति का प्रचलन बढ़ रहा है। जनहित के निर्णयों के लिए चिन्तना नहीं हो रही निर्वाचन प्रचार के समय प्रत्याशी या उसकी पार्टी अपने कार्य की योजना बताने के बजाय एक दूसरे पर कीचड़ उछालने का ही काम करते हैं और अपने अपने बाग्जाल से वोट पाने की विधा अपनानते हैं। चुनाव आयोग को निर्वाचन सही ढंग से कराने की प्रक्रिया का अधिकार है उसे चाहिए आज बढ़ते इन सभी विकारों से मुक्त निर्वाचन कराने के लिए अपने अधिकार का पूरी तरह से उपयोग करें। अनर्गल प्रलाप करने वालों, व्यक्तिगत लांच्छन लगाने वालों धन का अपव्यय करने वालों को सख्ती से रोकें। यथावश्यक उन्हें चुनाव लड़ने के अधिकार से भी लंचित कराने की व्यवस्था करें।

सभी पार्टियों के घोषणा पत्र सार्वजनिक हों उनपर एक स्थान पर आमने सामने डिवेट करायी जाये ताकि जो उपादेय हो उसे स्वीकार करके जनता अपने वोट का सदुपयोग करें, अपना प्रतिनिधि चुने और सरकार का गठन हो एतदर्थ मेरी दृष्टि में सांसद या विधायक के निर्वाचन का सारा व्यय सरकार स्वयं वहन करे। जनसेवा से जनता में स्थान बनाने वाले को ही टिकट दिये जायें।

इन सभी सुधारों के लिए कोई जादुई छड़ी नहीं हो सकती। सभी प्रबुद्ध नागरिक शिक्षा शास्त्री समाज सेवी राजनेता व धार्मिक नेता इस पर गम्भीर चिन्तन और मन्थन करें और राजनीति के सही स्वरूप के संस्थापन के लिए प्रतिबद्ध हो ताकि राजनीति का विद्रूप राष्ट्र के लिए हानिकारक न हो, सभी राजनीतिक पार्टियां जनता में निस्पृह जन सेवा से स्थान बनाने वाले व्यक्तियों को ही अपनी पार्टी का टिकट देने के लिए संकल्प बद्ध हों। निश्चय ही ऐसा करके हम राष्ट्र को सुसमृद्ध संगठित सुराष्ट्र बनाने में समर्थ होंगे। विश्व हमारी राजनीतिक प्रतिभा के प्रति नतमस्तक होगा।

-सम्पादक

वेदों का एक ही सिद्धान्त सब अंधविश्वासों को समाप्त करने में पर्याप्त

वैदिक धर्म में सौ नहीं दो सौ नहीं सहस्त्रों सिद्धान्त हैं जो बुद्धि, तर्क व विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं यानि वेदों के सभी सिद्धांत बुद्धिसंगत है। अन्य सभी मत, पंथ, सम्प्रदायों के सिद्धान्त केवल चमत्कारों और अंधविश्वासों पर टिके हुए है। वैदिक धर्म-परम पिता परमात्मा के सर्वव्यापक यानि सृष्टि के कण कण में उपस्थित है तथा सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, अजर, अमर व अजन्मा-मानता है जब कि अन्य मत पंथ व सम्प्रदाय ईश्वर को कोई सांतवे आसमान पर, कोई चौथे आसमान पर मानता है तो शैव अपने ईश्वर शिव को कैलाश पर्वत पर मानता है तो वैष्णव अपने ईश्वर विष्णु को क्षीर सागर में एक कमल के फूल पर लेटे हुए मानता है तो कोई अपने आराध्य देव को बैकुण्ठ में बैठा हुआ मानते हैं। पर ये सब निराधार है। कारण एक स्थान पर बैठ कर ईश्वर पूरी सृष्टि का नहीं देख सकता और न ही सभी जीवों के कार्यो को देखकर उनके किये हुए अच्छे या बुरे कर्मो का फल, अच्छे कर्मो का फल सुख के रूप में देकर तथा बुरे कर्मो का फल दुख के रूप में नही दे सकता। इसलिए पूरी सृष्टि के रचयिता परमात्मा कभी भी एक स्थान पर बैठा नहीं रह सकता। उसको सर्वव्यापी, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान मानना ही पड़ेगा जिसे वैदिक धर्म मानता है। ईश्वर का कभी जन्म नहीं हो सकता कारण वह जन्म मरण के बंधन से परे है, इसीलिए वह अजन्मा, अमर व अमर कहलाता है। जन्म लेने वाला प्राणी कभी भी सर्वव्यापक नहीं हो सकता।

वेद-ईश्वर को सर्वशक्तिमान व न्यायकारी मानता है। वह कठिन से कठिन कार्य में भी किसी दूसरे का सहारा व सहयोग नहीं लेता, वह स्वयं सब काम करता है। जबकि हमारे ईसाई भाई ईसा मसीह को गॉड (ईश्वर) का इकलौता पुत्र मानते है और ईसा में विश्वास रखने वाले को ईसा गॉड से सिफारिश करके अपने भक्त के सब पापों को धुलाकर उसको पूर्ण सुखी बनाता है चाहे उसके कर्म कितने ही बुरे क्यों न हो ऐसे ईश्वर को आप कैसे न्यायकारी व सर्व शक्तिमान कह सकते हैं। ऐसे ही हमारे मुस्लिम भाई मोहम्मद साहब को खुदा का पैगम्बर यानि दूत मानते हैं उनका भी यही मत है जो मोहम्मद साहब को खुश कर लेगा खुदा भी उसके उपर खुश हो जायेगा और उसे जन्नत में भेज देगा। चाहे उसके कर्म कितने घिनौने हो। इसी प्रकार हमारे पौराणिक भाई भी किसी से पीछे नहीं है वे भी किसी देवता की मार्फत चाहे वह राम हो कृष्ण हो, हनुमान हो और चाहे दुर्गा हो या काली हो किसी की भी भक्ति करने से ही स्वर्ग मिल सकता है। ईश्वर की सीधी स्तुति, प्रार्थनोपासना करना कोई नहीं बताता। जब ईश्वर अपने किसी काम में भी किसी दूसरे का सहयोग नहीं लेता, वह अपनी न्याय व्यवस्था से स्वयं ही सब काम करता है तो फिर किसी को इकलौता पुत्र, पैगम्बर या किसी देवता को बीच का सहयोगी मानना यह मनुष्य की अज्ञानता ही कहलायेगी।

वेदों का एक प्रमुख सिद्धान्त यह है कि मनुष्य प्रकृति के विरूद्ध कभी कोई काम नहीं कर सकता। जैसे मनुष्य आंखों से देखता है और कानों से सुनता है। यदि कोई यह कहे कि फलां मनुष्य कानों से देखता है और आंखों से सुनता है यह प्रकृति नियम के विरूद्ध होने से इसे सत्य मत मानो। इन असत्य और असम्भव बातों को सत्य मानने वाले इन बातों को चमत्कार का रूप दे देते हैं। और कहते हैं कि यह पहुंचा हुआ संत या सन्यासी है यह ऐसे चमत्कार कर सकता है। किसी ने कहा है कि एक पहुंचे हुए सन्यासी को मैंने एक ही समय में कलकत्ता, मुम्बई, दिल्ली, मद्रास और अहमदाबाद में पांच जगह देखा। यह प्राकृतिक नियम के विरूद्ध है कारण एक व्यक्ति एक समय में एक ही स्थान पर रह सकता है। यदि कोई कहे तो उसे मिथ्या समझें। वर्तमान में सभी मत, पंथ व सम्प्रदाय इन चमत्कारों के माध्यम से ही अपने अपने मत को सबसे अच्छा बताते हैं और एक से एक मनगढन्त बात जोड़कर अपने मत की महानता सिद्ध करते हैं। जैसे ईश्वरीय नियम है कि जो जीव जैसा कार्य करेगा उसे वैसा ही फल मिलेगा। परंतु ईसाई भाई कहते हैं कि आप ईसा की शरण में जाओ तो गॉड आपके सारे पाप माफ कर देगा। यह ईश्वरीय नियम के विरूद्ध है इसलिए असम्भव है। इसी प्रकार मुस्लिम भाई भी कहता है कि तुम मोहम्मद साहब को खुश कर दो तो खुदा भी तुम्हें मोहम्मद साहब के कहने से जन्नत में भेज देगा चाहे तुमने कितने भी पाप किए हों। यही बात हमारे सनातनी भाई भी कहते हैं कि आप मंदिर के दिन में दो बार दर्शन कर लो आपको ईश्वर हर काम में सफलता देगा चाहे आप दिन भर कितना ही पाप करते रहो। वैदिक धर्म ही एक ऐसा है जो अच्छे काम का अच्छा और बुरे कर्मो का बुरा फल ईश्वर देता है, ऐसा मानता है। ईश्वर अपने बनाये नियमों के प्रतिकूल न तो कोई काम करता है न ही कर सकता है कारण ईश्वर भी अपने नियमों से बंधा हुआ है। ऐसी सच्ची बात वैदिक धर्म ही कह सकता है। अन्य मतों में इतनी सच्ची बात कहने की हिम्मत ही नहीं है। इसलिए हर व्यक्ति को वैदिक धर्म अपनाना चाहिए और ईश्वरीय ज्ञान वेदों के अनुसार चल कर अपने जीवन को सफल व शान्तिमय बनाते हुए मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होना चाहिए।

वैसे सृष्टि नियम के विरूद्ध चमत्कारिक बातें सभी मतों में है, जैसे मुस्लिम भाई कहते हैं कि हमारा पैगम्बर मोहम्मद साहब ने एक उंगली से चांद के टुकड़े कर दिये परंतु हमारे पुराणों में सब से अधिक चमत्कारिक बातें है जैसे हनुमान जी ने अपने बचपन में ही सूर्य को अपने मुख में रख लिया, कुंती के कर्ण कान से उत्पन्न हुआ, कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपने ऊँगली से उठा लिया, कृष्ण ने द्रोपदी का चीर बढ़ा दिया आदि। भूत प्रेत गंडा-डोरी, श्राद्ध-तर्पण, फलित ज्योतिष, ग्रहों का नाराज होना व खुश होना तथा मूर्ति पूजा व अवतार वाद को मानना अंधविश्वास व पाखण्ड हैं। कारण ये सब बातें प्रकृति नियम के विरूद्ध है। इसलिए इनको न मानकर वैदिक धर्म को मानना ही हर व्यक्ति के लिए श्रेयस्कर व लाभदायक होगा।

वैदिक धर्म के-ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए संध्या करना, दूषित वातावरण को शुद्ध करने के लिए हवन करना, शरीर को स्वस्थ रखते हुए यम नियमों से समाधि तक पहुंचने के लिए अष्टांग योग करना, दूसरों की भलाई के लिए परोपकार करना तथा वेदों सहित सभी आर्ष ग्रंथों को पढ़ना और उनके अनुसार जीवन बनाना आदि मुख्य-सिद्धान्त है जो तर्क, बुद्धि व विज्ञान संगत कर्म हैं। जो मनुष्य को स्वस्थ रखते हुए सुखी जीवन बनाने में पूर्ण सहायक है। इसलिए यदि हम अपने जीवन को स्वस्थ रखना चाहते है तो हमें अन्य मतो व पंथों को छोड कर वैदिक धर्म को अपनाना चाहिए जिससे हम अपने परिवार समाज, राष्ट्र व केवल मानव मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपने जीवन को सफलता की ऊँचाइयों को छूते हुए मोक्ष के अधिकारी बनें। इससे उत्तम अन्य कोई मार्ग नहीं है।

-खुशहाल चन्द्र आर्य
गोविन्द राम आर्य एण्ड संस
180, महात्मा गांधी रोड, दो तल्ला कोलकता-700007

thearyasamaj.org

वेद और पुराण

विद्यावाचस्पति वेदपाल वर्मा 'शास्त्री'

देशी विदेशी इतिहासकारों, विद्वानों, वैज्ञानिकों, ऋषियों-महर्षियों ने वेदों को विश्व के महान् सनातन् ज्ञान की संज्ञा दी है। यह ईश्वर का महाकाव्य वेद संसार की सब भाषाओं धर्मो का आधार है। इससे प्राचीन दूसरा कोई पदार्थ विद्या के ज्ञान विज्ञान का केन्द्र नहीं है। यह वेद ज्ञान सृष्टि से पूर्व प्रलयकाल में, उससे पूर्व सृष्टिकाल में भी ईश्वर के साथ था, आगे भी वेद ज्ञान उसी के साथ रहेगा। वेद ज्ञान कभी बूढ़ा नहीं होता है न पुराना होता है, यह सदा नित्य नया ही रहता है। संसार की कोई शक्ति वेद ज्ञान को दबा नहीं सकती है क्योंकि यह ज्ञानसर्वज्ञ-निराकार -सर्व शक्तिमान, अनादि-अनन्त-अजन्मा ईश्वर का ज्ञान केन्द्र है। इस विद्या को तिरस्कृत करने वाले का, इसकी उपेक्षा करने वाले का वंश नष्ट हो जाता है। वह वंश तथा राष्ट्र सन्तान दीर्घजीवी नहीं होती है। वहां किसी महान् आत्मा का जन्म नहीं होता है। वह वंश तथा राष्ट्र निर्धन हो जाता है। वहां हाहाकार मच जाता है ''५/१९/४ अथर्ववेद ''न वीरो जायते वृषा''।

वेद विद्या से दूर, अज्ञान से लिप्त पत्थर पूजक ब्राह्मणों ने अपना पेट भरने के लिए भगवान के नाम से पत्थर की कृत्रिम मूर्ति बनाकर, उसी से अपना व अपने बच्चों का गुजारा करने का अवैध रास्ता बना लिया है। इसे इन्होंने पेट भरने का उद्योग धंधा मान लिया है। मूर्ति पूजा से भगवान खुश नहीं होता। मूर्ति पूजा से भगवान को खुश करने की इनकी भी मनसा या रूचि नहीं है। केवल इस उद्योग धंधे से पेट पालन की फिक्र रहती है। मूर्ति पूजा से भगवान कैसे खुश होगा? मूर्ति निर्जीव जड़ पदार्थ है। ईश्वर चेतन सर्वज्ञ है। चेतन सर्वज्ञ का निर्जीव जड़ पत्थर से मिलाप होना असम्भव है। चेतन का चेतन से मिलाप होता है- जड़ से नहीं होता।

ईश्वर जीव प्रकृति तीनों अनादि और अनन्त हैं। ईश्वर चेतन सर्वज्ञ हैं। जीव चेतन अल्पज्ञ हैं तथा प्रकृति जड़ हैं। ईश्वर अपने पुत्र जीव के लिए सृष्टि का निर्माण करता है और उसी के लिये विभिन्न सामग्री प्रस्तुत करता है। सूर्य, चन्द्र, तारे, ग्रह, नक्षत्र, पृथ्वी आदि जड़ चेतन जगत को आकाश में चारों तरफ, ऊपर नीचे घुमा रहा हैं। इधर ये नास्तिक पाखण्डी ब्राह्मण जड़ मिट्टी से नित असंख्य गणेश नाम के भगवान बनाकर सर्वज्ञ समर्थ भगवान का अपमान कर रहे हैं। भगवान में सामर्थ्य है सृष्टि रचता है। क्या इन पत्थर पूजकों में मिट्टी के गणेश भगवान बनाने का सामर्थ्य हैं? नहीं, नहीं नहीं। अधिकतर पढ़े लिखे स्त्री पुरूष, गरीब अमीर वैज्ञानिक अध्यापक अपने सामने पण्डितों द्वारा मिट्टी का गणेश बनाने की ढोंगी क्रिया को देखते हैं और उन्हें मोटी दक्षिणा भेंट करते हैं। ये सब कुछ देख और समझकर भी चुप रहते हैं क्योंकि वे वेद विज्ञान से दूर बैठे, किस बेश पर उनके द्वारा किये ढोंग की पोल खोले। किंतु फिर भी वेद ज्ञान से हीन ब्राह्मणों द्वारा किये भगवान के अपमान में सहायक बनकर अपराधी की श्रेणी में आ जाते हैं। चुप रहना भी दोषी बनना है। नास्तिक भाव को पनाह देना है। महर्षि व्यास के महाभारत में मनु महाराज ने मनुस्मृति में, महर्षि ने संस्कार विधि में लिखा है कि ''सभा वा न प्रवेष्टव्यं-गन्तव्यं ना समन्जसम्। अब्रुवन् विब्रुवन् वापि नरो भवति किल्विशी।। अर्थात् सभा में जाओ तो सच को सच और झूठ को झूठ कहो सभा में झूठ का विरोध न करने वाला मौन बैठा मनुष्य भी पापी होता है।

ईश्वर भक्ति आत्मा का भोजन है। पत्थर पूजा आत्मा का भोजन नहीं है। पत्थर पूजा के उद्योग धंधें में ये नास्तिक इतने लिप्त रहते हैं कि इन्हें देश समाज की सुरक्षा और शान्ति की चिन्ता नहीं है। प्रातः सायं घण्टे घड़ियाल बजाकर महात्मा कबीर का भी अपमान कर रहे है। पत्थर पूजा तो ईश्वर का सरासर अपमान है ही। पत्थर पूजा इनके परिवार के पेट पालन की सीमा है। यही इनका वेद है घर बार है और यही इनका पुराण धर्म है। यही इनका वेद है यही इनका भगवान है।

इन जालसाजी ब्राह्मणों के गुरू १८ पुराण है जिन्हें ये नास्तिक वेद के समकालीन कहते हैं। कालिदास के समय इनकी संख्या छः थी आज ये पुराण १८ हो गये हैं और १८ ही इनके उप पुराण है। इन्हीं में राम, कृष्ण, शंकर और हिमालय के प्रतापी राजा शिव को अवतार वाद में घसीटकर उन महापुरूषों का अपमान कर रहे हैं। ईश्वर के भी इन्होंने २४ अवतार कर रक्खे हैं। इसी से इन्होंने देश को गुलाम बनवाया था और इस घृणित कार्य से आज भी शर निन्दा नहीं है। ईश्वर को भी इन्होंने गुलामी की पिटारी में बंद कर रखा है। इसी की शह पाकर इस्लामी आतंकवाद विश्व में खुला घूम रहा है।

सृष्टि के रचयिता परमात्मा के सनातन ज्ञान वेद को भूलकर मिश्र के विदेशी शूद्रों के रचित पुस्तकों को अपना धर्म ग्रंथ बना रहे हैं-जिनका कोई माता पिता नहीं है। ''विश्वधर्म परिचय'' के विद्वान लेखक श्री एच राम गुप्त के तथा अपने स्वाध्याय के आधार पर पुराणों का सूक्ष्मातिसूक्ष्म संक्षिप्त परिचय दे रहा हूँ। पुराणों का परिचय देना अपने बहुमूल्य समय को नष्ट करना है परंतु क्या करूँ चुप भी कैसे रहूँ? इन पत्थर पूजक पौराणिक ब्राह्मणों की अधार्मिक धूर्तता का उद्घोष करना विश्व के वैदिक समाज का कर्तव्य हैं।

सारे पुराण ईसा के बाद की शूद्रों की रचित अप्रमाणिक पुस्तकाकृति है। मिश्र से भागकर आये यहूदियों ने भारत के दक्षिणी समुद्र से देश में प्रवेश कर देखा यहां एक वर्ग जो पैरों में खडाऊँ, माथे पर तिलक लगाये, कंधे पर झोला लटकाये, टूटी फूटी संस्कृत बोलने वाले बिना परिश्रम किये खीर हलुअे पूडी का प्रतिदिन भोग लगाता है। आगत यहूदियों ने इसी वेश से सारे भारत में प्रवेश पाकरं फैलाव कर लिया। स्वयं भी दो अक्षर संस्कृत के सीखकर इस देश की संस्कृति को खूब बिगाड़ा।

चितपावनी नाम ब्राह्मण कहवा कर पुराण लिखने लगे तथा महाभारत गीता, मनुस्मृति आदि वैदिक ग्रंथों में प्रक्षेप कर उनका आकार बढ़ाया। महाकवि कालिदास काल में पुराणों की संख्या छः थी आज पुराण अठारह है। महर्षि धर्मसूत्र के समय इनके ८८००० श्लोक थे। आज इनकी संख्या ४ लाख १३ हजार ८०० है। ३ लाख २५ हजार ८०० श्लोक कहां से आ गये। गीता में कभी ७ अध्याय थे आज वहां १८ अध्याय है। पत्थर पूजक ब्राह्मण पुराणों को वेद के समकालीन कहते हैं। ये हैं ईसा के बाद की रचनायें। देखिये-

१- देवी भागवत पुराण का लेखक नास्तिक बोपदेव ''गीत गोविन्द'' के रचयिता जयदेव का भाई है। दोनों भाई राजा भोज के समय में हुये है। (भोज का समय है ४८४ ई० है पृष्ठ २२२ पर)

देवी भागवत पुराण कहता है कि पुराण पापों का नाश करने वाला है। दूसरा कोई पुराण पाप का नाश करने वाला नहीं है। (पृष्ठ २२२ पर)

२- विष्णु पुराण- महात्मा बुद्ध को अवतार मानता है (बुद्ध का जन्म ९२३ ई पूर्व है)

विष्णु पुराण में जैन और बौद्ध मत का खण्डन किया है।

विष्णु पुराण में विष्णु की पूजा उत्तम और शिव की पूजा को तुच्छ कहा है (२२४ पृष्ठ पर)

३- शिव पुराण में- जो शिव की पूजा नहीं करता वह चाण्डाल है।

४- पद्म पुराण और कूर्म पुराण में- शंकराचार्य को शिव का अवतार कहा है (२०९)

५- पद्मपुराण में- सोमनाथ, काशी, रामेश्वरम, मथुरा के मंदिरों को यवनों ने तोड़ा बताया है। (यवन इस देश में ७०० ई में आने प्रारम्भ हुये)

पद्मपुराण कहता है-पुष्कर में जो गधा भी रहता है वह चतुर्भुज ब्रह्मा के बराबर है (२०७ पृष्ठ पर)

६- मत्स्य पुराण में राजा विक्रमादित्य का वर्णन किया गया है उनका सन् १९५४ ई चल रहा है।

७- ब्रह्मपुराण और स्कन्द पुराण में- जगन्नाथ के मंदिर का महत्व लिखा है (जिसे नगराज राजा भीमदेव ने सम्वत् २३१ सन् १७४ई में बनवाया था। मंदिर पर यही तिथि लिखी है जिसे मैंने अपनी डायरी में जुलाई १९९७ में भारत भ्रमण में अपनी डायरी में उतार लिया था)

८- वामन पुराण में- यह पुराण सब पाप दूर करता है। यह पुराण सब पुराणों में प्रधान है।

९- ब्रह्म पुराण- यह पुराण वेदों की त्रुटियों को ठीक करने वाला है (तब तो यह पुराण वेद और ईश्वर से भी महान है) (२२३ पृष्ठ पर)

शिवपुराण में लिखा है कि कलियुग में यही पुराण मुक्ति दिला सकती है कोई वेद इनके बराबर नहीं है। (पृष्ठ २२३ पर)

११- मार्कण्डेय पुराण और विष्णु पुराण कहते है कि कलियुग में दोनों पुराण मोक्ष देती हैं।

१२- अग्नि पुराण कहता है इस पुराण के लिखने और पढ़ने वाले दोनों भगवान है। यह पुराण सबसे श्रेष्ठ हैं।

१३- वायु पुराण में लिखा है यदि कोई कसाई इस पुराण को सुन लें तो उसका मोक्ष हो जाता है। (२२४ पर)

१४- भविष्य पुराण कहता है केवल सूर्य की पूजा उत्तम हैं। (२२७ पर)

१५- स्कन्द पुराण में - एक पर्वत शिखर पर वट वृक्ष है जो प्रलयकाल में भी स्थिर रहता है। वह १ कोस लम्बा है।

१६- मार्कण्डेय पुराण कहता है कि ऋषि मार्कण्डेय ने करोड़ो वर्ष भगवान की आराधना की और वे सब प्रलय काल में भी बचे रहें। वहां पुण्यभद्रा नदी बहती हैं (श्लोक २ पृष्ठ ८०३)

सार-

१- इस प्रकार सब पुराणों में एक दूसरे का विरोध दर्शाया है। सबने सब तीर्थो की अलग अलग महिमा, प्रशंसा और आक्षेप किये है।

सब पुराण ''वदतो व्याघात'' दोषों से भरी पड़ी है। जो पूर्व में कह दिया बाद में उसी का विरोध कर दिया।

२- सब पुराण काम भाव की शिकार है।

३- सभी में शाप देने की भरमार है। योगिराज कृष्ण को गोपियों की रास लीला में नचाकर दुस्चरित्र बना दिया।

४- पुराणों में ईश्वर को विकारी कहा गया है क्योंकि वह अवतार धारण करता है।

५- सृष्टि उत्पत्ति में पद्म पुराण में रूद्र का आधा शरीर स्त्री का और आधा शरीर पुरूष का बताया गया है।

६- अग्नि पुराण में- ब्रह्मा ने अपने आधे अंग से स्त्री और आधे अंग से पुरूष पैदा किये।

७- पुराण यज्ञ में मांस की आहुति देना, यज्ञ में नरबलि देना तथा गंगा प्रवाह में पशुबलि धर्म कर्म कहता है।

८- पुराणों ने स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने से वंचित रखा। स्त्री शूद्रो के वेद पढ़ने से मूर्ति पूजकों को अपने उद्योग धंधे की क्रिया की समाप्ति का भय है।

वेद पढ़े बिना आप में आध्यात्मिक ज्ञान का प्रकाश नहीं होगा। मूर्तिपूजक आपको बहकाते रहेंगे। देश विदेश में आतंकवाद छाया रहेगा। युवा पीढ़ी को वेद मार्ग का रास्ता दिखाई नहीं देगा। इसी भावना को लेकर ''वेद में क्या और कहां'' के लेखन में महर्षियों ने भाष्यानुसार जबसे कलम उठाई है तभी से १८ पुराणों को कई बार देखा और पढ़ा है। आप सावधान रहिये, ऊपर लिखित वेदकी सरल संक्षिप्त हिन्दी सारणी देखिये। आपके हृदय में विकास की तरंगे उठेंगी। आत्मा में ईश्वर भक्ति का संचार होगा। आप के बच्चों के संस्कार उत्तम रहेंगे। आप सोते रहोगे तो महर्षि के उत्तराधिकारी शिष्य कहलाने में बाधा आयेगी, वेद का प्रचार प्रसार ढीला पड़ जायेगा। इससे आर्य समाज मर जायेगा। आप में वेद के प्रति श्रद्धा जागती रही तो मूर्तिपूजा छिप जायेगी। आपका देश महर्षियों का देश है इसकी रक्षा अपनी रक्षा है।

-माल्दाबाग, पुरानी गुड मण्डी
शाहपुर, मुजफ्फरनगर
मोबा० ०९९२७५७५७७७

नोट- ''वेद में क्या और कहाँ'' का प्रकाशन मीनाक्षी प्रकाशन बेगमपुल मेरठ उ०प्र० करता है। पिन-२५०००१ फोन- ०१२१-२६४१८३३

thearyasamaj.org

दिल्ली चलो का नारा- लगाने वाले युग पुरूष नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

-धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा'' इस वाक्य को अमर करने वाले नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को विश्व के सभी अबाल वृद्ध जानते हैं। नेताजी के नाम को अमर करने वाले भी सुभाष चन्द्र बोस ही रहे हैं और आज की तरह के नेताओं को देखकर किसी ने असली, फसली, नकली तीन प्रकार के नेताओं का नामकरण किया है लेकिन असली नेता तो वही है जो जनता का सच्चा मार्गदर्शन करें, नेतृत्व करें। एक विद्वान का चिन्तन मुझे अच्छा लगा, वे कहते हैं कि प्रत्येक युग का एक महापुरूष युग पुरूष होता है जैसे सतयुग में सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र जी त्रेता युग में मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी, द्वापर युग में मर्यादा रक्षक योगीराज श्री कृष्ण और कलियुग में अंग्रेज द्रोही नेता सुभाष चन्द्र बोस जी। चारों में लगभग कई बातों में समानता है। जैसे एकाकी जंगल में घूमना, तपस्या करना धर्म की रक्षा करना, बाहर से सेना लेकर अपने देश के लिए संघर्ष करना था और फिर विजय प्राप्त करके भी पृथक ही रहना ऐसी ऐसी कई विशेषतायें हैं जिनका विस्तार से आप वर्णन कर सकते हैं- यथा रामचन्द्र जी सुभाष चन्द्र बोस जी तो प्रायः कई बातों में समानता रखते हैं नेता जी बचपन से ही स्वाभिमानी रहते हुए अपने परिवार की पहचान पृथक बनाते हैं, छात्रावस्था में अंग्रेज अध्यापक के प्रति भी कठोर निर्णय लेते हैं जो सामान्य बालक के वश की बात नहीं हैं। अतः यह पूर्वजन्म के संस्कारों का ही प्रभाव माना जायेगा। जो छोटी अवस्था का बालक एक अध्यापक को जाकर कक्षा में ही थप्पड़ मार दें वह अपने राष्ट्र का अपमान सहन नहीं कर सकता यह एक चुनौती भी कही जा सकती है। नेता जी बाढ़ आने पर सेवा कार्य में जुट जाते हैं और गहरे पानी में नाव द्वारा लोगों की सेवा करना और उन्हें मरने से बचाना स्वयं अपनी मृत्यु को निमंत्रण देना है। नीरा आठ वर्ष की बालिका है जिसका भाई वसन्त कुमार १०-१२ वर्ष का है पानी में डूब जाता है उसे बचाना फिर उसे पढ़ाना और पूरे जीवन उसका अभिभावक बनकर उनका पालन पोषण करना ये सब बातें आपके जीवन की वह कड़ी है जो युग पुरूष के लिए प्रमाण रूप में प्रतिष्ठित है। फिर पढ़ाई करके उच्च पद पर जाने से पूर्व ही डिग्री को समाप्त कर देना जो त्याग के लिए यह प्रमाण सर्वोपरि है। आज के कल्पनातीत युग में महान् आश्चर्य है जहां माता पिता भाई बन्धु यह स्वप्न देखते हैं कि हमारा पुत्र, भाई इसके पश्चात डी.एम. जैसे उच्च पद पर प्रतिष्ठित होगा लोग मिलकर मिठाई बांटते हैं, नाचते हैं लेकिन ये राष्ट्र रक्षा हेतु अपनी उस डिग्री का अस्तित्व ही समाप्त कर रहे हैं। आपने सदैव राष्ट्र को सर्वोपरि मानते हुए कई कार्य किये हैं- देश के स्वाभिमान को नहीं गिरने दिया। अतः इन्हें प्रत्येक भारतीय नमन करता है। आपका सम्मान करता है प्रत्येक आबाल वृद्ध आज भी यही मान रहा है कि यदि उनके दर्शन हो जायें तो वह निहाल हो जायेगा। उनका जन्म ही सार्थक है जिसके प्रति इतना सम्मान हो लेकिन आपकी तो मृत्यु भी आज तक रहस्य बनी हुई हैं क्योंकि मृत्यु का कोई ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं है। १९४५ की विमान दुर्घटना के पश्चात् कई बार लोगों से मिलना देश के लिए योजना तैयार करना आपके विषय में कई बार लेख मिले है। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू जी की अंतिम यात्रा में उनके शव के पास बैठे हुए चित्र उपलब्ध है।

अतः बाद में लोगों ने पूछा कि यह चित्र कहां से आया किसी के पास उत्तर नहीं है। गुमनामी बाबा के विषय में चर्चा होती रहीं लेकिन कोई रूचि लेकर उसका पूर्ण समाधान करके पुष्ट नहीं कर पाया। अतः उनका जीवन रहस्यों से भरा हुआ है। मेरा तो एक मात्र उद्देश्य उनकी जयन्ती पर उनका स्मरण करना और उनके कार्यो के प्रति भावी पीढ़ी का ध्यान आकर्षित करना है कि वे यथार्थ नेता होकर असली नेता के रूप में प्रतिष्ठित हुए। जन भावनायें उनके साथ थी लोग उनके दर्शन करने के लिए अपने सारे कार्य छोड़कर दौड़ पड़ते थे। एक बार जब हापुड़ नगर में उनका आगमन हुआ था तों पूज्य पिता जी बताया करते थे कि जैसे ही सूचना मिली लोग जहां थे वहीं से हापुड़ की ओर भाग लिये उनका भाषण सुना दर्शन किए हजारों की भीड़ में उनका व्यक्तित्व सबसे अधिक शोभायमान था उनकी वाणी में वीरता गंभीरता थी और देश के लिए स्वतंत्रता के लिए लोगों का आह्वान कर रहे थे। उनका प्रभावशाली भाषण लोगों में चर्चा का विषय रहा। पुरानी पीढ़ी के लोगों से उनके संस्मरण सुना करते थे तो मन करता था कि वे जहां भी हो वहीं जाकर एक बार दर्शन अवश्य करें। वर्ष १९७३ में किसी ने सूचना दी थी कि नेताजी कानपुर आ रहे हैं कानपुर के लिए हम दौड़ पड़े। उन दिनों हम छात्र अवस्था में थे फूलबाग मैदान में भयंकर भीड़ थी लेकिन जब नेता जी नहीं आये तो वहां भीड़ ने टमाटर मिट्टी पत्थर आदि मारे उत्पात मचाकर लोग निराश-अपने घरों को आ गये। उनके नाम पर लोगों ने पार्टी बनाई और स्वप्न दिखाये कि आयेंगे पर नहीं आये। कुछ लोगों ने कारण बताया कि उन्हें अंतर्राष्ट्रीय अपराधी के रूप में अंग्रेजों ने स्वीकार किया है आते ही गिरफ्तार होंगे। लेकिन रहस्यों भरे जीवन पर बुद्धिजीवियों ने शोध भी किया है। पी.एच.डी. की डिग्री भी प्राप्त की है। मेरठ में एक डा.आर.पी.सिंह एक विद्यालय के प्रधानाचार्य है तथा समाजसेवी हैं आर्य समाज के जिलास्तर के अधिकारी कार्यकर्ता है, बड़े उत्साही युवक हैं। आपने भी उनके जीवन पर शोध किया है कर्नल तेजेन्द्र त्यागी ने भी उनके विषय मे तथ्यात्मक खोज करके स्मारिका लिखी है। ऐसे बहुत से विद्वान है जो समय समय पर लोगों का मार्गदर्शन करते रहे लेकिन अंतिम निर्णय पर कोई नहीं गया। जैसे भी हो वे थोड़े समय के लिए आये ये कहा जाये तो भी अच्छा नहीं लगता। वे तो आज भी विराजमान सत्ता की तरह प्रेरणा दे रहे हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि उनके प्रति सभी के मन में आस्था और श्रद्धा है और यही सम्पत्ति हमारी सबसे बड़ी होती है उन्होंने अपयश नहीं कमाया ''यशो वै सः - कीर्तिर्यस्य सः जीवति- अपयशो वै मृत्युः'' के आधार पर वे ऐसे महापुरूष है जो सदैव जीवित रहेंगे वे अमर हो गये वे मरेंगे नहीं और उनके मरने का काई प्रभाव भी नहीं है। भविष्य में सम्भावना भी नहीं है अतः अमर बलिदानी हो कर अमर बने रहें। सदैव राष्ट्र सेवा के लिए हमें प्रेरणा प्रदान करते रहें। उनके सपनों का भारत बनाने में हमारा योगदान बना रहे यही कामना भावी पीढ़ी से करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करूँगा कि युग पुरूष नेताजी के नाम से हम सदैव प्रेरणा लेकर अपना जीवन राष्ट्रसेवा हेतु समर्पित करने का संकल्प लें। यहीं उनकी जयन्ती मनाने का उद्देश्य होना चाहिए। प्रभों हमें सद्बुद्धि सामर्थ्य प्रदान करें।

आर्य संस्कार शाला गुधनी का वार्षिकोत्सव

बिल्सी, आर्य संस्कारशाला गुधनी का वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में संस्कारशाला के बच्चों द्वारा सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। कु० तृरित व कु० साक्षी ने ईश वंदना की और मुख्य अतिथि जितेन्द्र यादव एम०एल०सी० ने दीप जलाए। सत्यम आर्य व बेटियों ने स्वागत गीत ''त्वं जीव शरदः शतम्'' प्रस्तुत किया। पाँच वर्ष के छोटे बच्चों ने ''नन्हा मुन्ना राही हूँ'' गीत पर सामूहिक कार्यक्रम पेश किया जो बहुत सराहा गया। ईशू, मोना, प्रियंका, तानिया, विकास, प्रशांत आर्य व विपनेश आर्य ने 'देश के लिए जो जिए' सामूहिक गीत पेश किया तो कोशकी, अंजलि आर्या, ज्योति, निधि, निकिता, आनंद, प्रिंस, नैन्सी, सोनी, डोली, सुकृति, प्रशांत सिंह, निशांत, दुष्यन्त ने 'होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से' प्रस्तुत किया। महर्षि दयानन्द की झांकी तथा ऋषि कव्वाली खूब पसंद की गयी। अनेक बच्चों ने योगासन भी किए। वर्ष २०१४ को 'स्वास्थ्य रक्षा वर्ष' के रूप में मनाया गया। इस वर्ष हुई अनेक प्रतियोगिताओं के प्रतियोगियों को मुख्य अतिथि जितेन्द्र यादव द्वारा सम्मानित किया गया। लगभग १२५ बच्चों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर एम०एएल०सी० जितेन्द्र यादव ने कहा कि 'बिना संस्कारों के शिक्षा बेकार है। रावण शिक्षित था किन्तु संस्कारों से रहित था। संस्कारों के अभाव में ही बड़े पदों पर बैठे लोग भ्रष्टाचार करते हैं। आचार्य संजीव रूप २३ वर्षो से ग्राम में बच्चों को 'आर्य समाज' व संस्कार शाला के माध्यम से बच्चों को संस्कार देकर राष्ट्र का महती कार्य कर रहे हैं। उन्होंने उत्सव में आये लगभग ६०० से अधिक लोगों को आर्य समाज के साथ जुड़ने पर धन्यवाद दिया तथा गांव में कर्मशाला नल व लाइट लगाने का वचन दिया।

कार्यक्रम का संचालन संस्थापक आचार्य संजीव रूप व उमंग राज ने किया। 'अध्यक्षता वेदमुनि जी ने की। मंत्री अमरपाल सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया।

thearyasamaj.org

आर्य समाज लाला लाजपत राय के बलिदान को नहीं भुला सकता

विमल किशोर आर्य
वैदिक प्रवक्ता

पंजाब केसरी लाला लाजपत राय का जन्म २८ जनवरी १८६५ में लुधियाना जिले के धुरि ग्राम में एक अग्रवाल परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम राधाकृष्ण तथा माता का नाम गुलाब देवी था।

लाला जी का सार्वजनिक जीवन आर्य समाज के माध्यम से शुरू हुआ। उनका आर्य समाज में कैसे आगमन हुआ उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है - मैं नहीं भूल सकूंगा उस प्यार को जो पहली बार १८८२ में लाहौर आर्य समाज के उत्सव पर जाने पर मेरे साथ स्वर्गीय लाला सांईदास ने किया। मुझे पकड़ लिया और अलग ले जाकर कहने लगे कि हमने बहुत समय प्रतीक्षा की है। अब तुम हमारे साथ मिल जाओ। वे मेरे साथ बाते कर रहे थे उधर मेरे मुँह की ओर देखते और पीठ पर प्यार का हाथ फेरते जा रहे थे मैंने हाँ किया और उन्होंने समाज का प्रवेश फार्म मंगा लिया। मैने कुछ सोचा ही था कि वे हंसने लगे और कहने लगे मैं तुम्हारे हस्ताक्षर लिए बिना नहीं जाने दूँगा। मैंने हस्ताक्षर कर दिये। उस समय उनके मुख पर जो झलक प्रसन्नता की दिखाई दी उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। ऐसा मुझे अनुभव हुआ मानो उनको हिन्दुस्तान की बादशाहत मिल गई है। उस समय आर्य समाज में अल्प आयु में लाल बहादुर शास्त्री जो कि मुजफ्फरनगर आये समाज के उपदेशक थे उन्हें और लाला लाजपत राय जो कि उस समय १८ वर्ष की अवस्था में उत्सवों में बुलाने हेतु होड़ लगी हुई थी। लाला जी ने अम्बाला आर्य समाज के उत्सव में हिन्दी में व्याख्यान दिया वह लाला जी का ऐतिहासिक व्याख्यान बन गया। लाला जी का पूरा जीवन देश की आजादी के लिए समर्पित हो गया। इन्होंने वीर रस वाणी से उद्घोष किया कि "आजादी यह हमारा अधिकार है अंग्रेजों से भीख मांगने की वस्तु नहीं है। लाला जी को दो अन्य अपने विचारों के महारथी मिले उनमें एक थे श्री बाल गंगाधर तिलक दूसरे विपिन चन्द्र पाल। इस त्रिपुटि के मिलने से अंग्रेज सरकार का सिंहासन हिल उठा। सारा देश लाल-बाल-पाल की जय-जय कारों से गूंजने लगा।

६ मई १६०७ को १८१८ के प्रसिद्ध बंगाल रेग्युलेशन एक्ट के अधीन लाला जी को उनके परम सहयोगी महर्षि दयानन्द के भक्त आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता शहीद सरदार भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह को बन्दी बनाकर माण्डले जेल में झूठा आरोप लगाते हुए भेज दिया कि आपने पचास हजार आर्य युवकों की सेना लेकर देश में शस्त्र क्रांति पैदा करना चाहते थे परंतु लाला जी तथा सरदार अजीत सिंह की गिरफ्तारी रंग लाई चारो ओर जुलूस निकाले गये विरोधी जन सभायें होने लगी। विद्रोह ने भयंकर रूप धारण कर लिया। अंग्रेजों ने यह महसूस किया कि हमने लाला जी को गिरफ्तार कर बहुत बड़ी भूल की। अंततोगत्वा अंग्रेजों ने लाला जी को जेल से रिहा कर दिया जब वे माण्डले जेल से रिहा होने पर लाहौर आये तब जनता द्वारा उनका जोरदार स्वागत किया गया। उस समय आर्य समाज के मंच से लाला जी जो बात कही थी वह आर्य समाज के लिए ऐतिहासिक बात बन गयी। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि मेरे जीवन में जो हिस्सा खराब है वह मेरा अपना है। वह या तो मुझे विरासत में मिला है या मेरे पूर्व जन्म के संस्कारों का फल है। लेकिन मेरे जीवन का जो हिस्सा अच्छा और लोगों में प्रशंसा योग्य है वह सब आर्य समाज की बदौलत है। आर्य समाज ने मुझे वैदिक धर्म से प्यार करना सिखाया, आर्य समाज ने मुझे प्राचीन आर्य सभ्यता का मान करना सिखाया। आर्य समाज ने प्राचीन आर्यो से मेरा सम्बंध जोड़ा और मुझे उनका सेवक और भक्त बनाया। आर्य समाज ने मुझे अपनी जाति से प्यार करना सिखाया, आर्य समाज ने कुर्बानी का मार्ग दिखाया। आर्य समाज ने मेरे अन्दर सत्य धर्म और स्वतंत्रता की रूह फूंकी। आर्य समाज ने मुझे संगठित करने का पाठ सिखलाया, आर्य समाज ने मुझे यह शिक्षा दी कि समाज, धर्म और देश की पूजा और उनकी सेवा में जो मनुष्य बलिदान करता है और दुख उठाता है उसे स्वर्ग का राज्य मिलता है। मैंने सार्वजनिक लोक सेवा के तमाम सबक आर्य समाज में रहते हुए आर्य समाज से सीखें।

आर्य समाज के क्षेत्र में मैंने अपने प्यारे मित्र बनायें, आर्य समाज को क्षेत्र में मैंने सार्वजनिक जीवन में पवित्रता के नमूने देखें। आर्य समाज के उपकार मेरी गर्दन पर अनगिनत और असीम हैं। अगर मेरा बाल-बाल भी आर्य समाज पर निछावर हो जायें तो भी मैं आर्य समाज के उपकारों से उऋण नहीं हो सकता।

लाला जी ने कहा कि आर्य समाज में दाखिल न हुआ होता तो ईश्वर ही जाने क्या होता। मगर यह सच है कि मैं आज जो कुछ हूँ वह न होता। उन्होंने कई बार विश्वास के साथ लिखा-मैंने संसार में सिर्फ स्वामी दयानन्द को अपना गुरू माना और आर्य समाज मेरी माता है। इन दोनों की गोद में खेला हूँ।

लाला जी १६०८ में इंग्लैंड गये वहां इन्होंने वाणी तथा लेखनी द्वारा अंग्रेजों के सामने हिन्दुस्तान पर उनके द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों का भांडा फोड़ा। आपकी प्रभावशाली वाणी से अंग्रेजों की राजधानी लंदन में खलबली मच गयी। महान क्रांतिकारी महर्षि दयानन्द के परम शिष्य तथा लंदन में इण्डिया हाउस की स्थापना करने वाले श्री श्याम कृष्ण वर्मा जी से सम्पर्क हुआ। ज्ञातव्य हो कि स्वामी दयानन्द और श्याम कृष्ण वर्मा का ननिहाल एक ही स्थान का था।इसलिये स्वामी जी श्याम कृष्ण वर्मा को बहुत मानते थे। स्वामी जी ने श्याम कृष्ण वर्मा को विदेश में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु भेजा था परंतु वह वीर सावरकर जी के सम्पर्क में आने पर भारत की आजादी के आन्दोलन में रूचि लेने लगे और वह लाला लाजपत राय का मार्ग दर्शन करने लगे।

लाला जी सन् १६१३ में लंदन से जापान गये वहां से प्रयास करते हुए अमेरिका पहुच गये। उस समय प्रथम महा युद्ध शुरू हो गया था। आप स्वदेश लौटना चाहते थे परंतु आप को हिन्दुस्तान आने की अनुमति न मिली क्योंकि ब्रिटिश सरकार को खतरा प्रतीत हो रहा था इसीलिए उन्हें लगभग पांच साल अमेरिका में ही रहना पड़ा जिससे आर्थिक स्थिति भी बिगड़ने लगी। परंतु दयानन्द का सिपाही ईश्वर विश्वासी ईश्वर पर विश्वास रखते हुये अपने लेखों और भाषणों से अमेरिका में अंग्रेजों द्वारा हिन्दुस्तान की जनता पर किये जा रहे जुल्मो सितम की दर्द भरी दास्तां रखी। अमेरिका की कई पत्र पत्रिकायें आपको लेख भेजने के लिए आमंत्रण देती जिससे आपको जो पारितोषिक मिलता उससे अपना गुजारा चलाते थे और भाषणों से अमेरिका में क्रांति पैदा कर दी। उन्हीं दिनों अमेरिका में ही आपने आर्य समाज का प्रसिद्ध छः सौ पन्नों का वृहद ग्रंथ 'द आर्य समाज' लिखा था। उस ग्रंथ में आर्य समाज के कार्य तथा सिद्धान्तों को बहुत ही सुन्दर ढंग से पेश किया है। इस ग्रंथ के कारण पश्चिम में आर्य समाज की विचार धारा को फैलाने में बड़ी मदद मिली। लाला जी को अमेरिका में आर्थिक संकट का बहुत सामना करना पड़ा। इन्हीं लोगों से जो पारितोषिक मिलता उसी से अपना गुजारा चलाते थे। रोटी वो स्वयं अपने हाथ से बनाते थे कपड़ा भी स्वयं धोते थे। अमेरिका में पांच वर्ष लाला जी के लिए कांटो की शैया थे।

३० सितम्बर १६२१ को देशद्रोही भाषण के जुर्म में लाला जी को गिरफ्तार कर लिया गया। डेढ़ वर्ष की सजा सुनाई गयी। सरकार को परिस्थितिवश मजबूरन लाला जी को शीघ्र बन्दीगृह से छोड़ना पड़ा। जेल से छूटने ही सन् १६२४ में लाला जी ने स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों पर चलते हुये एक कमेटी का गठन किया जिसका नाम था "अखिल भारतीय अछूतोद्धार कमेटी" इसके द्वारा भारत के लगभग ६ करोड़ लोगों को उन्नति की राह पर ले जाने का काफी प्रयास भी किया। इसके अन्तर्गत स्त्री शिक्षा, पर्दा प्रथा उन्मूलन, अनाथ उद्धार, विधवा विवाह, हिन्दी प्रचार छुआछूत विरोध जैसे कार्य भी किये जिसके लिए राष्ट्र सदैव उनका ऋणी रहेगा।

सन् १६२७ नवम्बर माह में तत्कालीन वायसराय लार्ड इर्विन ने भारतीय विधान कमीशन की नियुक्ति की घोषणा की जिसका आशय यह था कि प्रत्येक दस वर्ष में भारत की राजनैतिक अवस्था की ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा जांच

शेष पृष्ठ.....7

thearyasamaj.org

आयुष्काम (महामृत्युंजय) यज्ञ और हम

मनमोहन कुमार आर्य

सभी प्राणियों को ईश्वर ने बनाया है। ईश्वर सत्य, चेतन, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वातिसूक्ष्म, नित्य, अनादि, अजन्मा, अमर, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान है। जीवात्मा सत्य, चेतन, अल्पज्ञ,एकदेशी, आकार रहित, सूक्ष्म, जन्म व मरण धर्मा, कर्मो को करने वाला व उनके फलों को भोगने वाला आदि स्वरूप वाला है। संसार में एक तीसरा एवं अंतिम पदार्थ प्रकृति है। इसकी दो अवस्थायें है एक कारण प्रकृति और दूसरी कार्य प्रकृति। कार्य प्रकृति यह हमारी सृष्टि वा ब्रह्माण्ड है। मूल अर्थात् कारण प्रकृति भी सूक्ष्म व जड़ तत्व है जिसमें ईश्वर व जीवात्मा की तरह किसी प्रकार की संवेदना नहीं होती।

जीवात्मायें अनन्त संख्या में हमारे इस ब्रह्माण्ड में हैं। इनका स्वरूप जन्म को धारण करना व मृत्यु को प्राप्त करना है। मनुष्य जीवन में यह जिन कर्मो को करता है उनमें के क्रियमाण कर्म होते हैं उसका फल उसको इसी जन्म में मिल जाता है। कुछ संचित कर्म होते हैं जिनका फल भोगना शेष रहता है जो जीवात्मा को पुनर्जन्म प्राप्त कर अगले जन्म में भोगने होते हैं। कर्मानुसार ही जीवों को मनुष्य व इतर पशु, पक्षी आदि योनियां प्राप्त होती हैं। मनुष्य योनि कर्म व भोग योनि दोनो हैं तथा इतर सभी पशु व पक्षी योनियां केवल भोग योनियां है। यह पशु पक्षी योनियां एक प्रकार से ईश्वर की जेल है जिसमें अनुचित, अधर्म अथवा पाप कर्मो के फलों को भोगा जाता है।

हम सभी स्त्री व पुरूष अत्यन्त भाग्यशाली हैं जिन्हें ईश्वर की कृपा, दया तथा हमारे पूर्व जन्म के संचित कर्मो अथवा प्रारब्ध के अनुसार मनुष्य योनि प्राप्त हुई। इसका कारण है कि मनुष्य योनि सुख विशेष से परिपूर्ण हैं तथा इसमें दुख कम हैं जबकि इतर योनियों में सुख तो हैं परंतु सुख विशेष नहीं है और दुःख अधिक हैं। वह उन्नति नहीं कर सकते हैं जिस प्रकार से मनुष्य योनि में हुआ करती है। हमें मनुष्य जन्म ईश्वर से प्राप्त हुआ है। यह क्यों प्राप्त हुआ? इसका या तो हमें ज्ञान नहीं है या हम उसे भूले हुए हैं। पहला कारण व उद्देश्य तो यह है कि हमें पूर्व जन्मों के अवशिष्ट कर्मो अर्थात् अपने प्रारब्ध के अच्छे व बुरे कर्मो के फलों के अनुरूप सुख व दुःखों को भोगना है। दूसरा कारण व उद्देश्य अधिक से अधिक अच्छे कर्म यथा ईश्वर भक्ति अर्थात उसकी ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करने के साथ यज्ञ अग्निहोत्र, सेवा, परोपकार, दान आदि पुण्य कर्मो को करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें अपना ज्ञान भी अधिक से अधिक बढ़ाना होगा अन्यथा न तो हम अच्छे कर्म ही कर पायेंगे जिसके कारण हमारा यह जीवन व मृत्यु के बाद का भावी जीवन भी दुःखों से पूर्ण होगा। ज्ञान की वृद्धि केवल आजकल की स्कूली शिक्षा से सम्भव नहीं है। यह यथार्थ ज्ञान व विद्या वेदों व वैदिक साहित्य के अध्ययन से प्राप्त होती हैं जिनमें वेद, दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति आदि ग्रंथ हैं वहीं सरलतम व अपरिहार्य ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश, आर्याभिविनय, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, व्यवहारभानु,संस्कार विधि आदि भी हैं। इन ग्रंथों के अध्ययन से हमें अपने जीवन का वास्तविक उद्देश्य पता चलता है। वह क्या है, वह है धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष। अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है जो विचारणीय है। यह जीवात्मा की ऐसी अवस्था है जिसमें जीवन जन्म-मरण के चक्र से छूट कर मुक्त हो जाता है। परमात्मा के सान्निध्य में रहता है और ३१ नील १० खरब व ४० अरब वर्षो (३,११,०४,००० मिलियन वर्ष) की अवधि तक सुखों व आनन्द को भोगता है। इसको विस्तार से जानने के लिए सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करना चाहिए।

ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का ज्ञान दिया और उसके माध्यम से यज्ञ-अग्निहोत्र करने की प्रेरणा और आज्ञा दी। ईश्वर हमारा माता-पिता, आचार्य, राजा व न्यायाधीश है। उसकी आज्ञा का पालन करना हमारा परम कर्तव्य है। हम सब मनुष्य, स्त्री व पुरूष व गृहस्थी यज्ञ क्यों करें? इसलिए कि इससे वायु शुद्ध होती है। शुद्ध वायु में सांस लेने से हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहता है, हम बीमार नहीं पड़ते हैं और असाध्य रोगों से बचे रहते हैं। हमारे यज्ञ करने से जो वायु शुद्ध होती है उसका लाभ सभी प्राणियों को होता है। दूसरा लाभ यह भी है कि यज्ञ करने से आवश्यकता व इच्छानुसार वर्षा होती है और हमारी वनस्पतियां व औषधियां पुष्ट व अधिक प्रभावशाली होकर हमारे जीवन व स्वास्थ्य के अनुकूल होती है। यज्ञ करने से ३ लाभ यह भी होते हैं कि यज्ञ में उपस्थित विद्वानों जो कि देव कहलाते हैं उनका सत्कार किया जाता है व उनके अनुभव व ज्ञान से परिपूर्ण उपदेशामृत श्रवण करने का अवसर मिलता है। यज्ञ करना एक प्रकार का उत्कृष्ट दान है। हम जो पदार्थ यज्ञ में आहुत करते हैं और जो दक्षिणा पुरोहित व विद्वानों को देते हैं उससे यज्ञ की परम्परा जारी रहती है जिससे हमें उसका पुण्य यश व कीर्ति की प्राप्ति, ईश्वर आज्ञा के पालन से पुण्यों की प्राप्ति जिससे प्रारब्ध बनता है और जो हमारे परजन्म में लाभ देने के साथ हमारे मोक्ष रूपी अभीष्ट व उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होने के साथ हमें मोक्ष के निकट ले जाता है। हमारे आदर्श मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम तथा श्री योगेश्वर कृष्ण सहित महर्षि दयानन्द भी यज्ञ करते कराते रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने आदि ऋषि व राजा मनु का उल्लेख कर प्रत्येक गृहस्थी के लिए प्रातः सायं ईश्वरोपासना-ब्रह्मयज्ञ-संध्या व दैनिक अग्निहोत्र को अनिवार्य कर्तव्य बताया है। हम ऋषि-मुनियों व विद्वान पूर्वजों की सन्ततियां हैं। हमें अपने इन पूर्वजों का अनुकरण व अनुसरण करना है हम अपने अनुभव के आधार पर यह भी कहना चाहते हैं कि यज्ञ करने से अभीष्ट की प्राप्ति व सिद्धि होती है। उदाहरणार्थ यदि हम रोग मुक्ति, सुख प्राप्ति व लम्बी आयु के लिए यज्ञ करते हैं तो हमारे कर्म व भावना के अनुरूप ईश्वर से हमें हमारी प्रार्थना व पात्रता के अनुसार फल मिलता है अर्थात् हमारी सभी सात्विक इच्छायें पूरी होती है और प्रार्थना से भी कई बार अधिक पदार्थो की प्राप्ति होती है। इसके लिए अध्ययन व अखण्ड ईश्वर विश्वास की आवश्यकता है।

मृत्युंजय मंत्र त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।' में कहा गया है कि हम आत्मा और शरीर को बढ़ाने वाले तथा तीनों कालों, भूत, वर्तमान व भविष्य के ज्ञाता परमेश्वर की प्रतिदिन अच्छी प्रकार वेद विधि से उपासना करें। जैसे लता से जुड़ा हुआ खरबूजा पककर सुगन्धित एवं मधुर स्वाद वाला होकर बेल से स्वतः छूट जाता है वैसे ही परमेश्वर! हम यशस्वी जीवन वाले होकर जन्म-मरण के बन्धन से छूटकर आपकी कृपा से मोक्ष को प्राप्त करें। यह मंत्र ईश्वर ने ही रचा है और हमें इस आशय से प्रदान किया है कि हम ईश्वर से इसके द्वारा प्रार्थना करें और स्वस्थ जीवन के आयुर्वेद आदि ग्रंथों में दिए गये सभी नियमों का पालन करते हुए ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना को करके बन्धनों से छूट कर मुक्ति को प्राप्त हों। हम शिक्षित बन्धुओं से अनुरोध करते हैं कि यह यज्ञ विज्ञान को जानकर उससे लाभ उठायें।

निवास- १९६ चुक्खूवाला-२
देहरादून- २४८००१
०९४१२९८५१२१

आर्य उप प्रतिनिधि सभा झांसी द्वारा आयोजित

सामवेद परायण यज्ञ प्रवचन कार्यक्रम सम्पन्न

झांसी जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित स्व० जयचन्द्र आर्य पूर्व संचालक दैनिक जागरण झांसी व पूर्व प्रधान आर्य समाज झांसी की स्मृति में दिन १२ जनवरी २०१५ से दिनांक १४ जनवरी २०१५ तक सामवेद परायण यज्ञ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य नरेश दत्त जी बिजनौर थे वेद पाठ श्रीमती उषा चौरसिया व पं० देवव्रत आर्य ने किया। यजमान श्री यशोवर्धन गुप्त पत्नी सहित थे एवं पूर्णाहुति श्री राजेन्द्र गुप्त एवं पत्नी श्रीमती कृष्णा गुप्ता ने दी। उक्त दोनों सज्जन क्रमशः झांसी दैनिक जागरण के सम्पादक व प्रबंध सम्पादक है।

इस यज्ञ कार्यक्रम में झांसी तथा ललितपुर जनपद के समस्त आर्य जनों ने उल्लास पूर्वक भाग लिय और सफल बनाया।

वेदारी लाल आर्य
मंत्री आर्य समाज, झांसी

अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला प्रगति मैदान दिल्ली

प्रगति मैदान दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला १४ फरवरी २०१५ से २२ फरवरी २०१५ तक लगने जा रहा है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली के द्वारा भी वैदिक साहित्य के विक्रय एवं प्रचार हेतु दुकानें लगाई जा रही है। जो कि प्रचार हेतु छूट पर दी जायेंगी। कुछ साहित्य पर विशेष छूट भी दी जायेगी तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रणीत कालजयी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश को प्रचारार्थ मात्र १०/- रूपये में उपलब्ध कराया जायेगा। आप सभी बच्चों सगे सम्बन्धियों एवं इष्ट मित्रों सहित वैदिक साहित्य क्रय कर वेद, धर्म, शिक्षा, संस्कृति एवं सभ्यता तथा अपने प्राचीन भारतीय गौरव का ज्ञान प्राप्त कर स्वयं लाभ उठावें और दूसरों को भी प्रेरणा दें।

आशा है आप अधिक से अधिक संख्या में आकर प्रचार प्रसार में सहयोग देंगे और साहित्य से लाभ उठायेंगे।

एस०पी०सिंह
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

thearyasamaj.org

उदार हृदय थे ब्रह्मचारी राजसिंह

पं0नन्द लाल 'निर्भय' सिद्धानाचार्य

प्राचीन विद्वानों ने कहा है ''होनहार बिरवान के होत चीकने पात'' अर्थात् अच्छे पौधे के पत्ते चिकने होते हैं। इसका भावार्थ है कि महान पुरूषों के लक्षण बालपन में ही दिख जाते हैं। महान व्यक्तियों की विशेषताये पहले से ही दिखने लगती है ऐसे ही व्यक्ति थे ब्रह्मचारी राज सिंह आर्य।

मैं उन्हें सन् १९७0 से जानता था। उनके हृदय में देश धर्म जाति की सेवा करने की भावना प्रबल थी। श्री अनिल आर्य, ब्रह्मचारी राज सिंह आर्य तथा मेरा भतीजा वेद प्रकाश आर्य ये तीनों आर्य युवक परिषद में कंधे से कंधा मिलाकर बड़े उत्साह व लगन से कार्य करते थे। स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली तथा पंडित बाल दिवाकर हंस इनका देश सेवा का कार्य देखकर बहुत खुश होते थे। पूरे भारत में ये त्रिमूर्ति आर्य समाज का कार्य करने के लिए प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी थी।

अचानक आर्य युवक राजसिंह आर्य के मन में किसी साथी के परामर्श के कारण फिल्मों में कार्य करने की चाह जगी और वे बम्बई चले गए जब यह समाचार स्वामी आनन्द बोध जी तथा पं0 बाल दिवाकर हंस को मिला तो उन्हें भारी दुख हुआ। उन्हीं दिनों मैं अपनी काव्य रचना देने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, कार्यालय दिल्ली गया। मैंने स्वामी आनन्द बोध जी व आर्य नेता पंडित बाल दिवाकर हंस को अभिवादन किया। मुझे देखते ही दोनों नेताओं ने आह भरते हुए कहा - अरे पंडित नन्दलाल जी! अच्छा हुआ आप आ गये। आपको एक काम करना है, ''आप किसी तरह राजसिंह आर्य को दिल्ली बुलाओ और उन्हें आर्य वीर दल का कार्य करने के लिए तैयार करो।''

मैंने दोनों आर्य नेताओं को आश्वासन दिया कि मैं पूरा यत्न करूँगा। मैंने उसके बाद राजसिंह को यह समाचार दिया फलस्वरूप वे मेरी बात मान गये और दिल्ली आकर आर्य वीर दल का कार्य जोर शोर से करने लगे। थोड़े दिनों में ही उन्होंने पूरे देश में आर्य वीर दल की ख्याति फैला दी। पंडित बाल दिवाकर हंस उन्हें चन्द्रशेखर कहकर बहुत खुश होते थे।

वे व्यवहार कुशल, उदार हृदय, विनम्र, शील व निर्भीक युवक थे। वे अपनों से बड़ो का पूरा सम्मान करते थे। मैं जब कभी उनसे मिलता था तो वे खड़े होकर अभिवादन करते थे। बराबर वालों को व अपने से छोटों से प्यार करना उनकी अच्छी आदत थी।

सन् १९९६ में आर्य समाज टैगोर गार्डन दिल्ली का वार्षिक उत्सव था। पंडित शिव कुमार शास्त्री मंत्री केन्द्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, डा0 महेश विद्यालंकार, आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री मौजूद थे। उस समय मैं भी उपस्थित था। श्री मल्होत्रा जी मंच संचालक थे उसी समय राजसिंह जी ने उन्हें सलाह दी कि पंडित नन्दलाल जी निर्भय उच्च कोटि के कवि लेखक और गायक है इसलिए उन्हें सबसे अंत में बुलवाया जाये तो अच्छा रहेगा।'' मल्होत्रा जी ने ऐसा ही किया था। आर्य समाज सेक्टर-७, फरीदाबाद के वार्षिक उत्सव पर भी उन्होंने आर्य समाज के मंत्री श्री बलवीर सिंह मलिक से कहकर मुझे अंत में बुलवाया था। एक बार आर्य समाज नगीना मेवात (हरियाणा) में उनकी वेद कथा चल रही थी तो मैं भी उनसे मिलने चला गया परिणाम स्वरूप वहां भी उन्होंने मुझे बोलने का समय दिलवाया था।

ऐसे विद्वान नेता उपदेशक आर्य जगत में बहुत थोड़े से है जो अन्य उपदेशकों, भजनोपदेशकों का सम्मान करते हैं। वे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा हनुमान रोड, के लगभग ६ वर्ष प्रधान रहे। उस दौरान उनका व्यवहार आर्यजनों के प्रति अति उत्तम एवं प्रशंसनीय रहा। अगर यह प्रवृत्ति सभी आर्य विद्वानों अर्थात् आर्य नेताओं में आ जाये तो विश्व का कल्याण हो जाये। वस्तुतः वे सच्चे आर्य थे। उनकी कथनी करनी एक थी। वे आचार्य बलदेव जी महाराज के सच्चे भक्त थे। अंत में मेरी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि -

''हे भगवान! जगत के स्वामी, दया करो तुम दया करो।
दूर करो पाखण्ड जगत से, अविद्या रूपी तिमिर हरो।।
नेता भेजो राजसिंह से, जो वैदिक प्रचार करें।
श्रेष्ठ जनों का मान करें, जो दुष्ट जनों से नहीं डरें।।
जिससे यह ऋषियों का भारत, गुरू जगत का बन जाये।
राम, कृष्ण जैसे नेता हों, कष्ट नहीं कोई पाये।।

-आर्य सदन बहीन मेवात क्षेत्र
हरियाणा
चलभाष-९८१३८४५७७४

पृष्ठ.....7 का शेष

की जाये। सात सदस्यों वाले इस कमीशन के अध्यक्ष पद पर सर जान साइमन की नियुक्ति की गई परंतु भारत का एक भी प्रतिनिधि नहीं लिया गया। यह राष्ट्र का महान अपमान समझा गया। लाला जी ने भारतीय धारा सभा में साईमन कमीशन के विरोध का प्रस्ताव उपस्थित किया। यह कमीशन १९२८ में भारत आया भारत द्वारा इसके विरोध में सारे हिन्दुस्तान में काले झण्डों से उसका स्वागत किया गया और ''साइमन कमीशन गो बैक'' के नारो से गूंज उठा। यही साइमन ३० अक्टूबर १९२८ को आर्य समाज की राजधानी लाहौर आने वाला था। प्रजा के लोकप्रिय आर्य समाजी नेता लाला लाजपत राय के नेतृत्व में वहां भी इस साईमन का काले झण्डों से स्वागत किया गया। जिसकी पूरी व्यवस्था महर्षि दयानन्द कालेज के तेजस्वी क्रान्तिकारी आर्य युवक शहीद सम्राट सरदार भगत सिंह तथा शहीद शिरोमणी श्री सुखदेव जी और उनके साथियों ने की। पता लगने पर पुलिस ने सरदार भगत सिंह के घर धावा बोला सुखदेव जी उस समय सरदार भगत सिंह के घर पर ही थे पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। जब लोगों को पता चला तो वे भीड़ लेकर कोतवाली गये और सुखदेव जी को छुडा लाये।

भारतीय क्रान्तिकारियों ने लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में पुनः काले झण्डे के साथ साइमन गो बैक के नारे लगाते हुए साइमन का पीछा किया जो कि उस समय लाहौर में ही था। प्रदर्शनकारियों और पुलिस में काफी बात बढ़ गयी। तभी पुलिस के एक नवयुवक अंग्रेज पुलिस अफसर मि. साण्डर्स ने लाला जी पर ताबड़तोड़ लाढ़ियां बरसानी आरम्भ कर दी जबकि भीड़ में किसी व्यक्ति ने हिंसक कार्य नहीं किया था किंतु सब सर्वथा शान्त खड़े थे। इसी लाठी चार्ज के थोड़े दिनों बाद लाला जी का देहान्त हो गया इस दुखद घटना से जनता का हृदय वेदना से परिपूर्ण हो उठा और दुख के स्थान पर प्रतिहिंसा भड़क उठी। लाला जी ने अपनी मृत्यु से पूर्व अपने क्रांतिकारी साथियों को सम्बोधित करते हुए कहा था कि आज मेरे ऊपर किये गये लाठी प्रहार के लहू की एक एक बूंद ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील बनेगी। फिर क्या था उत्तर प्रदेश के शेर चन्द्रशेखर आजाद को जब लाला जी की हत्या का पता लगा तब वे लाहौर पहुचे। आजाद भगत सिंह सुखदेव तथा राजगुरू आदि आर्य युवकों ने मिलकर अपने प्यारे नेता की हत्या का बदला लेना ठान लिया १७ दिसम्बर को पूज्य लाला जी के हत्यारे मि0 साण्डर्स को जब वे आफिस से निकलकर मोटरसाइकिल पर सवार हुए इतने में राजगुरू ने रिवाल्वर से एक गोली चलां दी जो साण्डर्स के गले से पार हो गयी वह वहीं गिर पड़ा तब सरदार भगत सिंह ने एक के बाद एक कर सात गोलियां मारी जिससे वह जीवित न रह जायें। भगत सिंह तथा राजगुरू कार्य पूरा करते ही दयानन्द कालेज की ओर भागे। तभी साण्डर्स के साथ का एक भारतीय चानन सिंह नामक पुलिस इन्सपेक्टर भी आ गया उसने भगत सिंह व राजगुरू को ललकारा इतने में पीछे से चन्द्रशेखर आजाद ने उन्हें गोली का निशाना बनाकर यमलोक पहुंचा दिया। इस प्रकार इन आर्य वीरों ने लाला जी की हत्या का बदला लेकर भारत का मस्तक ऊँचा कर दिया। महर्षि दयानन्द के दीवाने सिपाही के बारे में फ्रेंच के तत्ववेत्ता रोम्यां रोलां ने लाला जी के महत्वपूर्ण जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा था - ''मैं समझता हूँ कि यदि दयानन्द सरस्वती आज हमारे बीच होते तो वह लाला जी के जीवन में आर्य समाज को जीवित जागृत चित्र को देखकर अत्यन्त प्रसन्न होते। लाला लाजपत राय वीर थे। उन्होंने न्याय और सत्य की रक्षा में अपना जीवन अर्पण कर दिया।

विराम खण्ड, लखनऊ
मो. ७४९९९९८२९४

thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

....

....

....

आर्य समाज बिहारी पुर, बरेली का १३२वां वार्षिकोत्सव एवं ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज बिहारीपुर बरेली का १३२वां वार्षिकोत्सव एवं ऋषि बोध उत्सव दिनांक १५ फरवरी, २०१५ से दि० २१ फरवरी, २०१५ तक बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। दिनांक १७ फरवरी दिन मंगलवार को विशाल शोभायात्रा भी निकाली जायेगी जो नगर के विभिन्न मार्गो से होती हुई आर्य समाज बिहारीपुर पर समाप्त होगी।

वार्षिकोत्सव में स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती वेद भिक्षु जी (बरेली), आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी (दिल्ली) आचार्य विष्णुदत्त जी (साहिबाबाद), डा. पवित्रा आचार्या (सासनी हाथरस) भजनोपदेशक श्री यशदेव आर्य (आँवला) आदि पधार रहे हैं।

इसमें प्रातः ६ बजे से ८ बजे तक हवन ८ बजे से १० बजे तक प्रवचन व भजनोपदेश तथा सायंकालीन सत्र सायं ७:३० से रात्रि १० बजे तक भजन उपदेश होंगे।

विशेष आयोजनों में दिनांक १६ फरवरी को ऋषि बोधोत्सव, दि. १८ फरवरी को आर्य पारिवारिक वैदिक सम्मेलन एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम, दि. १६ फरवरी को संगोष्ठी व सम्मान समारोह एवं दि. २० फरवरी को संगोष्ठी व दि. २१ फरवरी को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होंगे।

आर्य स्त्री समाज का विशेष आयोजन दि. १५ व १६ फरवरी २०१५ स्थान आर्य स्त्री समाज, स्त्री सुधार कन्या इण्टर कालेज, बरेली के पीछे होगा कन्या गुरूकुल सासकी हाथरस की ब्रह्मचारिणियों के द्वारा विशेष आकर्षक कार्यक्रम भी होंगे।

डा. श्वेतकेतु शर्मा
मंत्री

डा. ओ.पी. अग्रवाल
प्रधान

काशी आर्य समाज बुलानाला में बसंतोत्सव पर यज्ञ अनुष्ठान सम्पन्न

बसंत पंचमी नव रचना तथा सांस्कृतिक चेतना का पर्व

काशी आर्य समाज बुलानाला के सभाकक्ष में शनिवार को बसंत पंचमी पर्व यज्ञ-अनुष्ठान के साथ सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर काशी आर्य विद्वत परिषद के अध्यक्ष पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने कहा कि बसंत पंचमी नव रचना, मंगल, उल्लास, उमंग, पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा सांस्कृतिक चेतना का पर्व है, जो सम्पूर्ण प्रकृति के साथ सम्पूर्ण लोक मानस को नूतन अनुभूति से अनुप्राणित करता है।

काशी आर्य समाज के प्रधान श्री नाथ सिंह पटेल की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम का प्रारम्भ विशेष पर्व मंत्रों तथा सम्पूर्ण कल्याण के लिये स्वष्तिवाचन मंत्रों के साथ यज्ञ अनुष्ठान से सम्पन्न हुआ। जिसे श्री मोतीलाल आर्य ने सम्पन्न कराया, यज्ञ के यजमान डा. विशाल सिंह कोषाध्यक्ष तथा बृजभूषण सिंह उपमंत्री थे। श्री रमेश जी आर्य ने सुमधुर गीतों को प्रस्तुत कर श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। इस अवसर पर सर्वश्री प्रकाश नारायण शास्त्री, डॉ. विशाल सिंह, बृजभूषण सिंह, लाल चन्द आर्य, शम्भू नाथ जी, राजकुमार विश्वकर्मा, विभा आर्य, हेमा आर्य एवं सत्यनिष्ठा आर्य आदि उपस्थित रहे।

-प्रकाश नारायण शास्त्री
मंत्री

आर्य समाज कोंकैरा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कोंकैरा (वृन्दावन-मथुरा) का ५३वां वार्षिकोत्सव दिनांक २६ से २८ फरवरी १५ तक मनाया जायेगा।

जिसमें नित्य प्रातः ८ बजे से १० बजे तक देव यज्ञ १० बजे से १२ बजे तक भजन व वेदोपदेश तथा अपरान्ह २ से ५:३० बजे तक एवं रात्रि ८ से १०:३० बजे तक भजन व व्याख्यान होंगे। जिसमें विद्वानों से ज्ञानार्जन का लाभ मिलेगा।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
संरक्षक

आर्य समाज रामगढ़ का 111वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज रामगढ़ मीरजापुर का १११वां वार्षिकोत्सव आगामी १६ से १७ फरवरी १५ को स्थानीय मेला मैदान में आयोजित किया गया है। जिसमें आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान पं. श्री विश्वव्रत शास्त्री (लखनऊ) श्रीमती धर्म रक्षिता आर्य (बेगूसराय बिहार) विमल किशोर आर्य वैदिक प्रवक्ता (लखनऊ) श्री जीवन सिंह (रजौली) आदि पधार रहे हैं।

उपरोक्त कार्यक्रम की जानकारी आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के उप प्रधान श्री बेचन सिंह आर्य ने दी।

रामनाथ सिंह, मंत्री
आर्य समाज रामगढ़ मीरजापुर, उ.प्र.

दीप

माटी के दीप जलाने वाले कोई ऐसा दीप जलाओं रे।
इस भूली भटकी मानवता को प्यार की राह दिखाओ रे।।
मानवता हुई है लहुलुहान टूट रहा है देश महान।
दानवता मांग रही वरदान मुझको मुक्त करो भगवान।।
साधारण जन अब करे पुकार त्राहि माम त्राहि माम।
सभ्य कहाने वाला भारत में फैला इसमें त्रास।
भय का ताण्डव करने वाले कोई प्यार का राग सुना दे रे।
इस भूली भटकी मानवता......

जगत गुरू कहलाते थे जो ब्रह्मज्ञान सिखलाते थे
ज्ञान का सूरज पूरब से जो पश्चिम लेकर जाते थे
शांतिपूर्ण अस्तित्व सभी को दुनिया को पाठ पढ़ाते थे
पंच शील का सिंदूर लगाकर धरती की मांग सजाते थे
ज्ञान का दीपक जलाओ अरे अंधियारा दूर भगाओ रे।
इस भूली भटकी मानवता......

सारा जग परिवार हमारा जिसने राग सुनाया था
त्रैतवाद की वीणा से एकत्ववाद जगाया था
सर्वखल्विदं ब्रह्म का अखण्ड उद्घोष गुंजाया था
निष्काम कर्म है ब्रह्मयोग गीता ज्ञान बतलाया था
इस भारत में कृष्ण कन्हैया फिर से वापस लाओ रे
इस भूली भटकी मानवता......

मेरा भारत भटक गया है अब अपने ही नारो से
पावन धरती घायल हो गयी पापो और अत्याचारों से
गांधी गौतम देख रहे है दूर गगन के तारों से
देश की नैया डूब रही है अपने खेवनहारों से
देव दयानन्द फिर से आओ पाखण्ड ढोंग भगाओ रे
इस भूली भटकी मानवता......

-विजय देव,
ग्राम-हीरावंडी, पो. नगीना,
बिजनौर

शोक सभा

आर्य समाज चौकिया चुनार मीरजापुर के प्रधान श्री श्याम नारायन सिंह की भाभी का देहान्त दिनांक २०.१.१५ को हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार चुनार घाट पर पूर्ण वैदिक विधि अनुसार आर्य समाज के पुरोहित श्री अमर नाथ सिंह ने कराया जिसमें जिले के सभी सम्भ्रांत आर्य लोग उपस्थित हुये।

- आर्य समाज रेणुकूट सोनभद्र के पूर्व मंत्री श्री खिरधर लाल जी की धर्म पत्नी का स्वर्गवास २३.१.१५ को हो गया। जिनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक विधान से सम्पन्न हुई। जिसमें नगर के आर्य बंधुओं ने भाग लिया तथा वेद प्रचार मण्डल क्रियात एवं आर्य समाज बगहा के श्री बेचन सिंह ने मृतक की आत्मा की सद्गति एवं दुखी परिजनों की मनःशान्ति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

बेचन सिंह
आर्य समाज, बगहा,
मिर्जापुर

स्वामी—आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक—आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक—श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफसेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है—सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।